15. जांच सूची (चेक लिस्टिंग) की शक्ति

भारत के एक अग्रणी प्रबंधन संस्थान में, उसके अगले 10 से 15 वर्षों में विकास के लिए एक योजना तैयार करने के लिए परिप्रेक्ष्य योजना (Perspective Planning) का एक अभ्यास किया जा रहा था। एक दिन चाय के क्लब में कुछ युवा जिज्ञासु संकाय सदस्यों ने वहां बैठे वरिष्ठ सहकर्मियों से संस्थान के शैक्षिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के कार्य का प्रबंधन करने के बारे में अपने अनुभव / विचार साझा करने के लिएकहा। वरिष्ठ सहकर्मियों में से एक, प्रोफेसर चिदंबरम ने संस्थान में कुछ साल पहले मात्र 4 महीने के समय में प्रबंधन स्नातकोत्तर कार्यक्रम में 3.5 गुना वृद्धि करने की एक कहानी सुनाई (मज़ा लेने के लिए कहानी ‘‘शाबाशी’’ पढ़ें)। प्रोफेसर नंदकुमार, एक अन्य वरिष्ठ सहयोगी, ने युवा सहयोगियों के अनुरोध पर निम्नलिखित अनुभव सुनाया।

"विकास सूची को तैयार करने और कार्यान्वित करने के लिए चेक सूची तैयार करना एक महत्वपूर्ण प्रबंधन अस्त्र माना जाता है लेकिन यह कितना शक्तिशाली है, इसे प्रबंधन साहित्य में विशेष रूप से वर्णित नहीं किया गया है। शायद सन1996 **की** गर्मियों में मैं संस्थान की बोर्ड बैठक में भाग ले रहा था। संस्थान के विकास पर चर्चा के एक समय, बोर्ड के अध्यक्ष ने एक संकाय सदस्य को देखा, और पूछा कि ‘‘संस्थान पीजीपी प्रवेश की संख्या (जो लगभग 125 छात्र थे) को 180 तक नहीं बढ़ा रहा? "

संकाय सदस्य ने विनम्रता से कहा कि सवाल उससे नहीं बल्कि संस्थान के निर्देशक से पूछा जाना चाहिए।

अध्यक्ष ने फिर कहा, "निदेशक का कहना है कि संकाय परिषद (Faculty Council) का मानना है कि व्याख्यान कक्ष, संकाय संख्या आदि जैसे विभिन्न बाधाओं के मद्देनजर प्रवेश की संख्या में वृद्धि संभव नहीं है। आप वर्तमान सुविधाओं में कम से कम 15-20 छात्र तो बढ़ा ही सकते हैं?"

संकाय सदस्य ने कहा, "निदेशक सही हो सकते है कि संकाय परिषद ने निर्णय लिया है कि संस्थान को एक और वर्ष का इंतजार करना चाहिए ताकि सभी आवश्यक बुनियादी ढांचे को सुव्यवस्थित किया जा सके। लेकिन आप कृपया निदेशक से पूछें कि क्या मैंने भी कभी ऐसा कहा है। एक अध्यापक के रूप में 15-20 छात्रों को बढ़ाने के बारे में मेरा विचार यह है कि यह नहीं किया जाना चाहिए। हमारे पास साठ छात्रों के लिए भी उचित कक्षाएं नहीं हैं। व्याख्यान कक्ष में एक पंक्ति में 9 विद्यार्थियों के साथ, मेरी आवाज़ सातवीं पंक्ति तक भी नहीं पहुंचती। किसी बिंदु पर चर्चा में छात्रों को सम्मिलित करने के लिए जब मैं माइक्रोफोन हाथ में लिए आगे और पीछे सातवें पंक्ति तक चलता हूँ तो उसका तार टूट जाता है। यदि छात्र मुझे और एक-दूसरे की बात नहीं सुन पाते, तो वे कैसे **केस विधि** (case method) से पढ़ पाएंगे? उसके बिना हम छात्रों को सिखाने के बजाय उसका दिखावा कर रहे होंगे। लेकिन आप निदेशक से पुष्टिकर सकते हैं कि मैंने कभी भी साठ छात्रों की एक पूर्ण कक्षा बढ़ाने का कोई विरोध नहीं किया है, यद्यपि इससे अध्यापन भारमु झ पर ही सबसे अधिक बढ़ेगा"।

"लेकिन निदेशक का कहना है कि यह संभव नहीं है। संकाय परिषद ने विद्यार्थियोंकी संख्या180 तक करने के लिए लगभग 30 संकाय सदस्यों की अनिवार्यता पर ज़ोर दिया है है"अध्यक्ष ने फिर कहा।

संकाय सदस्य ने हंस कर कहा, "हमारे संस्थानने बहानेबाजीऔर यह बताने/ समझाने की विशिष्ट योग्यता और कुशलता विकसित कर ली है कि "कोई काम **कैसे नहीं किया** जा सकता है"। अगर आप अगले वर्ष फरवरी में यही प्रश्न फिर पूछेंगे तो उत्तर ऐसा ही कुछ होगा। हम आपको बहुत अच्छी तरह समझा कर विश्वास दिला देंगे कि ऐसा क्यों नहीं हो सकता।"

अध्यक्ष से पूछा, "तो क्या किया जाना चाहिए?"

संकाय सदस्य ने उत्तर दिया "संस्थान को अगले शैक्षणिक वर्ष में १८० छात्रों के प्रवेश के लिए आवश्यक प्रबंधों की सूची बनाने की आज्ञा देनी चाहिए और प्रत्येक बोर्ड मीटिंग में सबसे पहले इस मुख्य एजेंडे पर चर्चा करना चाहिए कि क्या व्यवस्थाएं करनी बची हैं। संस्थान को अगले दिसंबर में बोर्ड की बैठक तक पुष्टि करनी होगी कि 180 छात्रों के प्रवेश के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पूरी कर ली गयी हैं।अगर यह किया जाता है, तो संभावना है कि अगले शैक्षणिक वर्ष से हमारे संस्थान में180 छात्रों को प्रवेश मिले।'

बोर्ड ने निदेशक को ऐसा ही करने के लिए कहा। और चमत्कार, आठ वर्षों के लम्बे अंतराल के बाद, अगले वर्ष (जुलाई 1997) छात्रों की प्रवेश संख्या180 थी। "मुझे कभी एहसास ही नहीं था कि प्रबंधन में जांच सूची तैयार करने और उपयोग करने में इतनी शक्तिहोती है। क्या आपलोगों को है? ", डॉ नंदकुमार ने मुस्कुराते हुए पूछा।

युवा संकाय सदस्ययह सब सुनकर हतप्रभ थे। क्या जांच सूची बनाने से विकास और वृद्धि हो सकती है? यदि ऐसा है तो संस्थान इसे आगे बढ़ाने के लिए क्यों तैयार नहीं करता है? इसे कैसे तैयार किया जाए? क्या हम रणनीति प्रबंधन अवधारणाओं का उपयोग करके प्रवेश संख्या 120 से 180 तक बढ़ाने के लिए जांच सूची तैयार कर सकते हैं? किस प्रकार यह सूची "शाबाशी" वाली कहानी से अलग होगी? कब प्रवेश संख्या से ज्यादा हो सकती है? ये सवाल उन सभी के मन में उठने लगे ।